चोल वंश

8th lecture
[BA HONS.]

→ ममता रानी
अतिथि सहायक प्राध्यापक
इतिहास विभाग
एस. एन. एस. आर. के.
एस. कॉलेज, सहरसा

Scanned with CamScanner

चोल वंश

→ चोल वंश के बारे में प्राचीन भारत में दो भागों में विभाजित करके अध्ययन किया जाता है।
(i) संगमकाल के अन्तर्गत
(ii) नौवीं शताब्दी में विजयालय द्वारा स्थापित चोल
(iii) वंश।
→ उत्तरमेरूर (तमिलनाडु) अभिलेख से इनलोगों के उपलब्धियों के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी मिलता है। स्थानीय स्वशासन और नटराज की मूर्ति के लिए ब चोल वंश विख्यात है। इन लोगों ने जिन क्षेत्र में शासन व्यवस्था को संचालित किया, उसे चोलमंडलम या तोण्डमंडलम कहा गया है।

विजयालय (850 - 875) AD.

→ यह चोलवंश का संस्थापक था।
→ इसने तंजौर को जीतकर राजधानी बनाया और इस उपलक्ष्य में नरकेसरी की उपाधि धारण किया।
→ इसने अपनी राजधानी तंजौर में चोलेश्वर मंदिर का निर्माण कराया, जो चोलों का प्रारंभिक मंदिर है।

आदित्य-I (875 - 907) AD.

इसके समय में पल्लवों के साथ संघर्ष हुआ और इसने पल्लव वंश के शासक अपराजित को पराजित करके उस वंश का अंत कर दिया। इस उपलक्ष्य में कोदण्ड राम की उपाधि धारण किया।

परांतक - I (907 - 955) AD.

इसने उत्तरमेरूर अभिलेख को जारी किया था, जिससे इस शासक के साथ-साथ चोलों के उपलब्धियों के बारे में जानकारी मिलता है। इसने पाण्ड्य राज्य पर आक्रमण करके राजधानी मदुरा को जीत लिया। तक्कोलम (949) का युद्ध चोल और राष्ट्रकूटों के बीच हुआ था। राष्ट्रकूट वंश के शासक कृष्ण - III ने इसको पराजित कर दिया।

Scanned with CamScanner

परांतक - II
(956 - 973) AD.

इसको इतिहास में सुंदर चोल के नाम से याद किया जाता है।

राजराज - I / अरिमोलीवर्मन
(985 - 1014) AD.

यह साम्राज्यवादी प्रवृत्ति का शासक था। इसने श्रीलंका पर आक्रमण किया और वहाँ के शासक महेन्द्र पंचम को पराजित करके उनकी राजधानी अनुराधापुरम पर अधिकार कर लिया। जीते हुए क्षेत्र का नाम मामुडीचोलमंडलम् रख दिया और इसकी राजधानी पोलोनरुवा को बनाया।

→ इसके समय में शैलेन्द्र वंश के शासक (जावा-सुमात्रा क्षेत्र) श्रीमार - विजयोत्तुंग - वर्मन ने नाग-नागपट्टम में एक बौद्ध मठ का निर्माण कराया था।

→ इस शासक ने सिंचाई व्यवस्था पर ध्यान दिया था साथ ही ऐतिहासिक तिथियों के साथ अभिलेख को भी जारी किया था।

→ कला के क्षेत्र में इसने अपनी राजधानी तंजौर में राजराजेश्वर मंदिर या वृहदेश्वर मंदिर (शैव धर्म) का निर्माण कराया, जो द्रविड़ कला का सर्वोत्तम कृति माना जाता है।

राजेन्द्र I
(1014 - 1044)

यह चोल वंश का सबसे महत्वपूर्ण शासक था। इसी के समय में सबसे अधिक क्षेत्र का विस्तार हुआ। इसने भी श्रीलंका के विरुद्ध अभियान

Scanned with CamScanner

किया जो सफल रहा। इसने श्रीलंका के राजा, रानी, उनकी पुत्री, वाहन, राजमुकुट पर अधिकार कर लिया। राजमुकुट का अपमान करने के लिए इसकी आलोचना की गई है। श्रीलंका के शासक महेन्द्र पंचम तंजौर के कैदखाने में मृत्यु को प्राप्त हुए।

→ इसने शैलेन्द्र वंशी शासक श्रीमार - विजयोतुंगवर्मन के साथ भी संघर्ष किया और उनके राज्य पर नियंत्रण स्थापित कर लिया। इसके साथ ही मालदीव और पीगू के क्षेत्र पर भी अपना नियंत्रण स्थापित कर लिया।

→ यह प्रथम शासक था, जिसने साम्राज्य विस्तार के क्रम में बंगाल के क्षेत्र को भी अपने नियंत्रण में कर लिया।

→ गंगा को पारकरने एवं इस क्षेत्र में विजय हासिल करने के उपलक्ष्य में गंगइकोण्ड चोल की उपाधि धारण किया।

→ इसने कावेरी नदी के तट पर गंगइकोण्ड चोलपुरम् नामक नगर का निर्माण कराया। इसी स्थल पर बृहदेश्वर मंदिर का निर्माण करवाया।

→ इसने सिंचाई व्यवस्था हेतु चोलगंगम् नामक नहर का निर्माण कराया।

राजाधिराज - I (1044 - 1052) AD. →

इसके समय में कोप्पम् का युद्ध सम्पन्न हुआ। इस युद्ध में घायल होने के कारण युद्ध भूमि में ही वीरगति को प्राप्त हुए।

Scanned with CamScanner

अधिराजेन्द्र (1070) AD →

यह विजयालय द्वारा स्थापित चोलवंश का अंतिम शासक था। यह आमलोगों के बीच लोकप्रिय नहीं था। जनसमूह के द्वारा इसको हत्या कर दी गई।

कुलोतुंग - I [1070 - 1120] AD →

अधिराजेन्द्र को हत्या के बाद गद्दी का संकट सुलझाने के लिए कुलोतुंग प्रथम को शासक बनाया गया। यहाँ से चोल - चालुक्य वंश की शुरुआत हुई।

→ यह प्रथम शासक था जिसने चीन के साथ व्यापारिक संबंध स्थापित करने का सफल प्रयास किया और 72 व्यापारियों का दल चीन भेज दिया।

→ अभिलेखों में इसे शुंगमिवर्त (करों को हटानेवाला) कहा गया है।

राजेन्द्र - III :- [1250 - 1279] AD :-

यह अंतिम शासक था, जिसको पाण्ड्य वंश के शासक कुलशेखर ने गद्दी से हटाकर इस वंश का अंत किया और इन लोगों के क्षेत्र पर नियंत्रण स्थापित कर लिया।

=x=

Scanned with CamScanner